शेख़ फ़रीद – सबद १२५

मै जाणिआ वड हंसु है तां मै कीता संगु ॥

सलोक, गुरु अमरदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

मै जाणिआ वड हंसु है तां मै कीता संगु ॥
जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि न भेड़ी अंगु ॥१२३॥

सार: मन अकसर बाहरी संकेतों पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि गहन सच्चाइयों को समझने की तुलना में इन्हें समझना ज़्यादा आसान होता है। इसी कारण से, लोग अकसर किसी के बाहरी रूप या सामाजिक दर्जे के आधार पर ही उसके बारे में राय बनाकर, उससे रिश्ते जोड़ लेते हैं। लेकिन जो कुछ हमें दिखाई देता है, वह सदा वास्तविकता नहीं दिखाता। जो रिश्ते सिर्फ़ ऊपरी बातों पर टिके होते हैं, वह कमज़ोर होते हैं और उनमें अकसर निराशा ही हाथ लगती है। सार्थक जीवन की शुरुआत तब होती है जब हम किसी के बाहरी रूप से आगे बढ़कर उसकी असलियत को समझने की कोशिश करते हैं।

मै जाणिआ वड हंसु है तां मै कीता संगु ॥
मैंने उसे शानदार हंस समझा, इसलिए उसके साथ रहा। यह दर्शाता है कि मन बाहरी रूपों के आधार पर संबंध बना लेता है, न कि आंतरिक सत्य के आधार पर।

जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि न भेड़ी अंगु ॥१२३॥
यदि मुझे ज्ञात होता कि वह एक साधारण बगुला है तो मैं जीवन में कभी उसके निकट न जाता। यह उस पीड़ा को दर्शाता है जो तब उत्पन्न होती है जब सत्य का बोध देर से होता है। (१२३)

तत्त्व: गुरु अमरदास, शेख़ फ़रीद की गलत निर्णय लेने के परिणामों के बारे में उनकी बातों से सहमत हैं और विवेक के महत्व पर जोर देते हैं। उनका संदेश यह बताता है कि बाहरी दिखावा अकसर भ्रामक हो सकता है और जो देखने में फायदेमंद लगता है, वह असल में लाभकारी नहीं भी हो सकता

है। यह चेतावनी के रूप में काम करता है कि हमें केवल ऊपरी सतह तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए क्योंकि ग़लत इरादे व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा में बाधा डाल सकते हैं और इस बात का एहसास तभी होता है जब व्यक्ति को उन ग़लतियों के परिणामों का सामना करना पड़ता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com